



ऋग्वेद मण्डल-9

ऋग्वेद मन्त्र 9.1.6

पुनाति ते परिस्रुतं सोमं सूर्यस्य दुहिता ।
वारेण शश्वता तना ॥

(पुनाति) पवित्र करने वाला (ते) आपके (परिस्रुतम्) सभी दिशाओं से प्राप्त होने योग्य (सोमम्) शुभ गुणों, दिव्य ज्ञान और जड़ी-बुटियों का (सूर्यस्य) सूर्य का (दुहिता) सुपुत्री (ऊषा, सूर्योदय की प्रथम किरणें) (वारेण) प्राप्त होने योग्य (शश्वता) सदैव रहने वाला, बिना बाधा के (तना) विशाल फैला हुआ ।

नोट :- यह मन्त्र यजुर्वेद 19.4 में समान रूप से आया है ।

व्याख्या :-

सोम किस प्रकार पवित्र होते हैं?

शश्वत अर्थात् बिना बाधा के सदा रहने वाली विशाल फैली हुई (ताप, प्रकाश, ऊर्जा और प्राण) जो सूर्य की पुत्री अर्थात् ऊषा, प्रातःकाल की प्रथम किरणों के रूप में प्राप्त करने योग्य है, सभी दिशाओं से प्राप्त होती है और आपके सोम लक्षणों को पवित्र करती है ।

जीवन में सार्थकता :-

ब्रह्म वेला अर्थात् ऊषा किस प्रकार मानव मस्तिष्क और व्यवहार पर प्रभाव डालती है?

शुभ गुण, दिव्य ज्ञान और जड़ी-बुटियाँ भी ब्रह्म बेला अर्थात् सूर्योदय से पूर्व जागने वाले लोगों के जीवन में शुद्ध और बलशाली हो जाती है ।

ऋग्वेद के सूक्त 1.48 और 49, 1.123, 1.124, 3.61, 4.30, 4.51, 4.52, 5.79, 5.80, 6.64, 6.65, 7.75 से 7.81 तक तथा 10.172 आदि विशेष रूप से सूर्योदय से पूर्व अर्थात् ऊषाकाल में उठने के लिए प्रेरित करते हैं । इस समय को ब्रह्म वेला कहा जाता है, क्योंकि यह समय हमारे अन्दर पवित्र आध्यात्मिक विचारों को पैदा करता है जो हमें सर्वोच्च ब्रह्म, परमात्मा, के ज्ञान के निकट ले आते हैं । प्रातः जागृत होने वाले लोग प्राकृतिक रूप से मन में और व्यवहार में शुभ लक्षण, दिव्य ज्ञान प्राप्त करने लगते हैं ।

ऋग्वेद मन्त्र 9.11.1

उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



अभि देवाँ इयक्षते ॥

(उप) निकट (अस्मै) उसका (गायता) गाना (महिमाओं का) (नरः) यज्ञ करने वाले लोग (पवमानाय) पवित्र करते हुए (इन्दवे) एक बूंद के लिए (सोम की), एक चिन्गारी के लिए (प्रकाश की) (अभि) की तरफ (देवान्) दिव्यताएँ (इयक्षते) ले जाती हैं, संयुक्त करती हैं।

नोट :- यह मन्त्र सामवेद 651 में समान रूप से आया है।

व्याख्या :-

हमें दिव्यताओं की तरफ कौन ले जाता है?

जो लोग यज्ञ करते हैं उन्हें केवल एक बूंद के लिए (सोम अर्थात् शुभ गुणों और दिव्य ज्ञान आदि के लिए) एक चिन्गारी के लिए (प्रकाश की) पवित्र करने वाले परमात्मा के निकट बैठना चाहिए और उसकी महिमाओं का गान करना चाहिए। वह हमें दिव्यताओं की ओर ले जाता है और उनके साथ जोड़ देता है।

जीवन में सार्थकता :-

हम दिव्यताओं से कैसे जुड़ सकते हैं?

परमात्मा किसको पसन्द करते हैं?

आध्यात्मिक पथ दिव्यताओं की तरफ जाता है और दिव्यताओं से जुड़ने के इच्छुक लोगों के लिए कुछ निश्चित मानदण्ड हैं :-

1. उसे यज्ञ करना चाहिए अर्थात् सबके कल्याण के लिए जीवन जीना।
2. उसे परमात्मा की महिमाओं का गान करना चाहिए जो सबको पवित्र करता है।
3. उसे परमात्मा के सोम की एक बूंद या उसके प्रकाश की केवल एक चिन्गारी को प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए।

जब ऐसा व्यक्ति दिव्य लक्षणों के साथ जुड़ जाता है तो उसके बाद वह परमात्मा की अनुभूति की तरफ अग्रसर होता है, क्योंकि परमात्मा ऐसे पवित्र दिव्य सफल लोगों को पसन्द करते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 9.11.2

अभि ते मधुना पयोऽथर्वाणो अशिश्युः।
देवं देवाय देवयु ॥

(अभि) की तरफ (ते) आपके (मधुना) मधुरता के लिए (पयः) पीना (सोम की बूंदें) (अथर्वाणः) दृढ़ संकल्पित (अशिश्युः) शरण लेता है, निर्भर करता है (देवम्) सर्वोच्च दिव्य (देवाय) दिव्य शक्तियाँ देने के लिए (देवयु) दिव्य शक्तियों की इच्छा करने वालों को।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



नोट :- यह मन्त्र सामवेद 652 में समान रूप से आया है।

व्याख्या :-

परमात्मा के मधुर पेय अर्थात् सर्वोच्च आनन्द की एक बूंद को प्राप्त करने का अधिकारी कौन है?
परमात्मा के मधुर पेय अर्थात् सर्वोच्च आनन्द की एक बूंद को कौन प्रदान कर सकता है?
केवल दृढ़ निश्चित व्यक्ति ही आपमें शरण लेते हैं और आप पर आपके मधुर पेय अर्थात् सोम की एक बूंद के लिए निर्भर होते हैं और केवल इसी एक इच्छा के साथ वे दृढ़ संकल्प होकर आपकी तरफ अग्रसर होते हैं। आप ही एक मात्र सर्वोच्च दिव्य हो जो उस बूंद के चाहने वाले को दिव्य शक्तियाँ दे सकते हो।

जीवन में सार्थकता :-

परमात्मा के मधुर पेय अर्थात् सर्वोच्च आनन्द की एक बूंद का क्या महत्त्व है?
सर्वोच्च दिव्य का मधुर पेय अमृत से भी अधिक महत्त्वपूर्ण है; सम्पदा और शक्तियों के किसी भी स्तर से अधिक; सांसारिक ज्ञान के किसी भी आयाम से भी अधिक। उस मधुर पेय की एक बूंद मानव जीवन के लिए सर्वोच्च उपलब्धि है, जिसके बाद कुछ भी प्राप्त करना शेष नहीं रहता।
गीता के अनुसार – यत् लब्ध्वा नापरो लाभः।
तैत्तरीयोपनिषद् 2.7 के अनुसार – परमात्मा की दिव्यता की एक बूंद ही सर्वोच्च आनन्द है।

ऋग्वेद मन्त्र 9.11.3

स नः पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते।
शं राजन्नोषधीभ्यः ॥

(सः) वह (सर्वोच्च दिव्य) (नः) हमारे लिए (पवस्व) पवित्र करने वाला हो (शम्) शांति, कल्याण और प्रसन्नता देने वाला (गवे) ज्ञानेन्द्रियों के लिए (शम्) शांति, कल्याण और प्रसन्नता देने वाला (जनाय) लोगों के लिए (शम्) शांति, कल्याण और प्रसन्नता देने वाला (अर्वते) कर्मेन्द्रियों के लिए (शम्) शांति, कल्याण और प्रसन्नता देने वाला (राजन) प्रकाशित करने वाला सर्वोच्च राजा (ओषधीभ्यः) औषधियाँ, जड़ी-बूटियाँ।

नोट :- यह मन्त्र सामवेद 653 में समान रूप से आया है।



व्याख्या :-

हमें पवित्र कौन कर सकता है?

वह, सर्वोच्च दिव्य और प्रकाशित करने वाला सर्वोच्च राजा, हमारे लिए पवित्र करने वाला हो; हमारी ज्ञानेन्द्रियों के लिए शान्ति, कल्याण, प्रसन्नता देने वाला हो; हमारी कर्मेन्द्रियों के लिए शान्ति, कल्याण, प्रसन्नता देने वाला हो; यज्ञ करने वाले लोगों के लिए शान्ति, कल्याण, प्रसन्नता देने वाला हो; औषधियों और जड़ी-बूटियों के लिए शान्ति, कल्याण, प्रसन्नता देने वाला हो।

जीवन में सार्थकता :-

पवित्र शरीर और मन के क्या लाभ हैं?

परमात्मा दृढ़ संकल्पित इच्छुक लोगों को अपने मधुर पेय अर्थात् सोम की एक बूंद के माध्यम से पवित्र करते हैं। एक बार जब ऐसा इच्छुक व्यक्ति पवित्र हो जाता है तो उसकी ज्ञानेन्द्रियाँ और कर्मेन्द्रियाँ भी स्वाभाविक रूप से उसके लिए तथा उसके माध्यम से अन्य लोगों के लिए भी शान्ति, कल्याण और प्रसन्नता देने वाली बन जाती हैं।

औषधियों और जड़ी-बूटियों की पवित्रता का अर्थ है कि पवित्रता से परिपूर्ण भोजन भी उसके लिए शान्ति, कल्याण, प्रसन्नता देने वाला बन जाता है।

शरीर और मन की पवित्रता केवल आध्यात्मिक मार्ग के लिए ही नहीं, अपितु भौतिक जीवन के लिए भी बहुत बड़ी सम्पदा है।

पवित्र शरीर और पवित्र मन स्वयं ही शान्ति, कल्याण, प्रसन्नता देने वाला बन जाता है।

ऋग्वेद मन्त्र 9.11.4

बभ्रवे नु स्वतवसेऽरुणाय दिविस्पृशे।
सोमाय गाथमर्चत ॥

(बभ्रवे) सबको पूर्ण करने वाला, सबको पुष्ट करने वाला (नु) निश्चित रूप से, गति के साथ (स्वतवसे) स्वयं बल से परिपूर्ण (अरुणाय) सर्वत्र व्याप्त (दिविस्पृशे) द्युलोक तक विस्तृत (सोमाय) सोम के लिए अथात् शुभ गुणों और दिव्य ज्ञान आदि के लिए (गाथम्) महिमागान (अर्चत) गाना।

व्याख्या :-

हमें किसका महिमागान करना चाहिए?

निश्चित रूप से और गति के साथ हमें उसका महिमागान करना चाहिए, जो है :-

1. सबको पूर्ण करने वाला, सबको पुष्ट करने वाला,
2. स्वयं बल से परिपूर्ण,
3. सर्वत्र व्याप्त,
4. द्युलोक तक विस्तृत।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



जीवन में सार्थकता :-

महिमागान के क्या लाभ है?

हमें उस सर्वोच्च शक्ति, बल से परिपूर्ण और द्युलोक में सर्वत्र व्याप्त का महिमागान अवश्य ही करना चाहिए जो सभी प्राणियों का समुचित पोषण करके हमारे जीवन को पूर्ण करता है।

प्रथम, किसी शक्ति का महिमागान करने से हम उसके साथ निकटता को महसूस करते हैं और उसकी अनुभूति करते हैं।

द्वितीय, उस सर्वोच्च परमात्मा का महिमागान अन्ततः हमारे स्वयं के महिमागान में परिवर्तित हो जाता है, क्योंकि वह सर्वोच्च शक्ति हमारे अन्दर ही विद्यमान है। इस प्रकार हम स्वयं का ही महिमागान करते हैं। तृतीय, महिमागान के द्वारा निकटता प्राप्त करने से उस सर्वोच्च शक्ति के कई लाभ भी हमें प्राप्त होते हैं जैसे – शांति, कल्याण, प्रसन्नता, पवित्रता और दिव्यता।

महिमागान के इस सिद्धान्त को हम अपने माता-पिता, वृद्धजनों और उच्चाधिकारियों पर भी लागू कर सकते हैं जिससे हमें उनकी निकटता प्राप्त हो और उनका आशीर्वाद और लाभ प्राप्त हो।

नोट :- अथर्ववेद 10.7.32 (यस्य भूमि प्रमाम्) तथा ऐसे ही अनेकों मन्त्र भी हमें परमात्मा की महिमागान के लिए प्रेरित करते हैं जो समूची सृष्टि अर्थात् भूमि, अन्तरिक्ष और द्युलोक आदि को पूरी तरह से व्याप्त करता है।

ऋग्वेद मन्त्र 9.11.5

हस्तच्युतेभिरद्रिभिः सुतं सोमं पुनीतन।

मधावा धावता मधु।।5।।

(हस्तच्युतेभिः) मुक्त हाथों से (दान करना, त्याग करना) (अद्रिभिः) परमात्मा से प्रेम करने वालों के साथ (सुतम्) पैदा करना (सोमम्) शुभ गुण, दिव्य ज्ञान आदि (पुनीतन) पवित्र करना (मधौ) उस सर्वोच्च ब्रह्म में (आधावता) नियुक्त करना, प्रयोग करना (मधु) मधुर (सोम)।

व्याख्या :-

सोम कैसे उत्पन्न होते हैं?

हमें सोम का प्रयोग कैसे करना चाहिए?

सोम अर्थात् शुभ गुण और दिव्य ज्ञान आदि मुक्त हाथों से दान करने और त्याग करने के साथ-साथ स्वयं को पवित्र करने के लिए परमात्मा से प्रेम करने पर उत्पन्न होते हैं। हमें सोम का प्रयोग केवल ब्रह्म के लिए ही करना चाहिए।

जीवन में सार्थकता :-

मानव जीवन का अन्तिम लक्ष्य क्या है?

महिमागान, पवित्रीकरण, सोम की उत्पत्ति, दिव्यताएँ और ब्रह्म आध्यात्मिक जीवन के एक गोल पथ का निर्माण करते हैं। एक से प्रारम्भ करो तो एक-एक करके अगले पड़ाव पर पहुँचते जाते हैं। इस मार्ग का अन्तिम लक्ष्य है चारों तरफ ब्रह्म की अनुभूति करना। पवित्रता और सोम भौतिक लक्ष्यों वाले सांसारिक

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



मार्ग पर भी दिव्य सफलताएँ उपलब्ध कराते हैं। यहाँ तक कि सांसारिक प्रगति के स्तर पर भी सर्वोच्च ब्रह्म की भूमिका का एक स्पर्श भी हमें अनुभूति के मार्ग पर ले जा सकता है।
महिमागान ————— पवित्रीकरण ————— सोम की उत्पत्ति ————— दिव्यताएँ ————— ब्रह्म————— ।

ऋग्वेद मन्त्र 9.11.6

नमसेदुप सीदत दध्नेदभि श्रीणीतन ।
इन्दुमिन्द्रे दधातन ॥

(नमस) विनम्र नमन के साथ (इत्) ये (उप) निकट (सीदत) स्थापित (दध्ना) हमारी मान्यता के साथ (धारणा) (इत्) ये (अभि) की तरफ, एकाग्रता के साथ (श्रीणीतन) हमारा ध्यान (इन्दुम्) बूंद को (सोम की) (इन्द्रे) सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा, के लिए (दधातन) धारण करो।

व्याख्या :-

महिमागान का क्या प्रभाव होता है?

कौन एकाग्रचित्त होता है?

हमारे विनम्र नमन के साथ, कृपया हमारे निकट (हमारे हृदय में) स्थापित होओ।

हमारी मान्यताओं (धारणा) के साथ हमारे ध्यान में एकाग्र होओ।

सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा, की अनुभूति के लिए इन्द्र सोम की बूंदों को धारण करता है और प्रयोग करता है।

जीवन में सार्थकता :-

भौतिक सांसारिक जीवन में भी अपने लक्ष्यों को कैसे प्राप्त करें?

इस बात को अपने मस्तिष्क में एक निश्चित मान्यता की तरह स्थापित कर लेना चाहिए कि महिमागान के साथ परमात्मा निश्चित रूप से हमारे हृदय के निकट महसूस होते हैं।

ध्यान के विषय में एकाग्रता प्राप्त करने के लिए इस मान्यता को धीरे-धीरे विकसित होने दें। केवल अन्तिम लक्ष्य के लिए ही अपने सभी प्रयास करने चाहिए।

भौतिक प्रगतिशील जीवन के लिए भी यही सिद्धान्त समान रूप से लागू होते हैं।

सूक्ति :-

(नमस इत् उप सीदत, ऋग्वेद 9.11.6)

हमारे विनम्र नमन के साथ, कृपया हमारे निकट (हमारे हृदय में) स्थापित होओ।

सूक्ति :- (इन्दुम् इन्द्रे दधातन, ऋग्वेद 9.11.6) सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा, की अनुभूति के लिए इन्द्र सोम की बूंदों को धारण करता है और प्रयोग करता है।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



ऋग्वेद मन्त्र 9.11.7

अमित्रहा विचर्षणिः पवस्व सोम शं गवे ।
देवेभ्यो अनुकामकृत् ॥

(अमित्र हा) अमित्रों का नाशक (अपने शत्रुओं का) (विचर्षणिः) विशेष रूप से देखता है (न्यायिक मन के साथ) (पवस्व) पवित्र करता है (सोम) दिव्यता की बूंदें अर्थात् शुभ गुण, दिव्य ज्ञान आदि (शम्) शान्ति, कल्याण और प्रसन्नता को देने वाला (गवे) हमारी ज्ञानेन्द्रियों के लिए (देवेभ्यः) दिव्य लोगों के लिए (अनुकाम कृत्) उनकी इच्छाएँ, प्रार्थनाएँ पूरी करता है ।

व्याख्या :-

परमात्मा अमित्र लोगों के साथ किस प्रकार व्यवहार करता है?

दिव्य लोगों की इच्छाएँ और प्रार्थनाएँ कौन पूरी करता है?

परमात्मा न्यायिक मन से अमित्र लोगों का नाश करने के लिए उन्हें विशेष रूप से देखता है। उसकी दिव्यता की बूंदें अर्थात् शुभ गुण, दिव्य ज्ञान आदि हमारी ज्ञानेन्द्रियों को पवित्र करते हैं और शान्ति, कल्याण और प्रसन्नता प्रदान करते हैं। जबकि वह दिव्य लोगों की इच्छाओं और प्रार्थनाओं को पूर्ण करता है।

जीवन में सार्थकता :-

विश्वास न करने वालों को परमात्मा किस प्रकार पवित्रता के लिए प्रेरित करता है?

जो लोग परमात्मा के साथ मित्रतापूर्ण सम्बन्ध बनाने के लिए प्रयास करते हैं वे दिव्य बन जाते हैं और परमात्मा उनकी इच्छाओं और प्रार्थनाओं को पूरा करते हैं। जबकि वे लोग जो परमात्मा के साथ अर्थात् अपनी मूल आत्मा के साथ, जो उनके स्वयं के अन्दर ही है, सम्बन्ध नहीं बनाना चाहते, वे परमात्मा के अमित्र बन जाते हैं, बल्कि अपने स्वयं के अमित्र बन जाते हैं और अपने अहंकार और इच्छाओं को बढ़ाते जाते हैं। अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए, ऐसे अविश्वासी लोग अन्य लोगों के विरुद्ध पाप और अपराध करने लगते हैं। फिर परमात्मा गर्जना करने वाली अपनी वज्र शक्ति का प्रयोग करते हुए प्रत्येक कार्य का समान और विपरीत हल प्रदान करते हैं। अपनी इस न्यायिक व्यवस्था के माध्यम से परमात्मा अविश्वासी लोगों की दुष्प्रवृत्ति को नष्ट करके उन्हें पवित्रता के लिए प्रेरित करते हैं और फिर उनकी इन्द्रियों के कल्याण के लिए सोम प्रदान करते हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 9.11.8

इन्द्राय सोम पातवे मदाय परि षिच्यसे ।
मनश्चिन्मनसस्पतिः ॥

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



(इन्द्राय) इन्द्र, इन्द्रियों के नियंत्रक के द्वारा (सोम) दिव्यता की बूंदें अर्थात् शुभगुण, ज्ञान आदि, परमात्मा की प्रेम की बूंदें (पातवे) पीने के लिए, अपनाने के लिए (मदाय) आनन्द के लिए (परि षिच्यसे) सभी दिशाओं में विस्तृत (जीवन में, समाज में) (मनः चित्) निश्चित रूप से मन में (मनसः पतिः) मन का रक्षक।

व्याख्या :-

सोम का अधिकारी कौन है?

सोम के क्या उद्देश्य हैं?

सोम, दिव्यता की बूंदें अर्थात् शुभगुण, ज्ञान आदि, परमात्मा की प्रेम की बूंदें, इन्द्र, इन्द्रियों के नियंत्रक, के द्वारा पीने के लिए हैं और अपनाने के लिए हैं। ये सोम आनन्द प्रदान करते हैं। इसीलिए इन्हें अपने जीवन में और समाज में चारों तरफ फैलाना चाहिए। ये सोम निश्चित रूप से हमारे मन में हैं और हमारे मन के रक्षक हैं।

जीवन में सार्थकता :-

सोम की क्या प्रकृति होती है?

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि सोम मनुष्यों के लिए अत्यन्त लाभकारी सम्पत्ति हैं। ये पहले से ही मन में विद्यमान होते हैं, परन्तु इनकी खेती करनी पड़ती है और अपने जीवन में इनका विस्तार करना पड़ता है जिससे यज्ञ कार्यों को करते हुए पूरे समाज का कल्याण हो सके। केवल सोम ही इसकी रक्षा करने वाले की और पूरे समाज की रक्षा करते हैं।

सोम दिव्य अमृत अर्थात् परमात्मा की प्रेम की बूंदें हैं। इसका अभिप्राय है कि परमात्मा का प्रेम प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में विद्यमान है किन्तु केवल इन्द्र पुरुष ही अपने आनन्द के लिए और चारों तरफ फैलाने के लिए इसकी अनुभूति प्राप्त करता है।

सूक्ति :- (सोम मनः चित् मनसः पतिः, ऋग्वेद मन्त्र 9.11.8)

ये सोम निश्चित रूप से हमारे मन में हैं और हमारे मन के रक्षक हैं।

ऋग्वेद मन्त्र 9.11.9

पवमान सुवीर्यं रयिं सोम रिरीहि नः।

इन्द्रविन्द्रेण नो युजा॥

(पवमान) पवित्र करने वाला परमात्मा (सुवीर्यम्) सर्वोत्तम, सुन्दर और मूल बल (रयिम्) गौरवशाली सम्पदा (सोम) दिव्यता की बूंदें अर्थात् शुभगुण, ज्ञान आदि, परमात्मा की प्रेम की बूंदें (रिरीहि) देता है (नः) हमें (इन्द्रो) दिव्य अमृत की बूंदों का देने वाला (इन्द्रेण) सर्वोच्च नियंत्रक, इन्द्रियों का नियंत्रक, महान् राजा (नः) हमें (युजा) संयुक्त करे, जोड़े।

व्याख्या :-

हम परमात्मा के साथ किस प्रकार जुड़ सकते हैं?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



पवित्र करने वाले परमात्मा, आपके सोम, दिव्यता की बूंदें अर्थात् शुभगुण, ज्ञान आदि, परमात्मा की प्रेम की बूंदें, हमें सर्वोत्तम, सुन्दर और मूल बल के रूप में तथा गौरवशाली सम्पदा के रूप में प्रदान करो। दिव्य अमृत की बूंदों को देने वाले! कृपया हमें इन्द्र, सर्वोच्च नियंत्रक, परमात्मा, इन्द्रियों के नियंत्रक अर्थात् इन्द्र पुरुष और महान् राजा के साथ संयुक्त करो।

जीवन में सार्थकता :-

दिव्यता का चक्र क्या है?

सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा, सबको पवित्र करने वाले हैं। जब हम पवित्र हो जाते हैं तो हमें सोम प्राप्त होते हैं। ये सोम हमारे जीवन में एक महान् चरित्र का निर्माण करते हैं। इस महान् चरित्र के बल पर, हमें असमान्तर दिव्य बल और गौरवशाली सम्पदा प्राप्त होती है जिसका प्रयोग हम यज्ञ कार्यों में कर सकते हैं। यज्ञ पहले हमें दिव्य बनाते हैं और उसके बाद हमें परमात्मा के साथ जोड़ते हैं।

ऋग्वेद का यह सम्पूर्ण सूक्त 9.11 दिव्यता के चक्र की व्याख्या करता है :-

महिमागान ————— पवित्रीकरण ————— सोम ————— यज्ञ ————— दिव्यताएँ ।

This file is incomplete/under construction

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171